MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-31, Vol-09 July to Sept. 2019

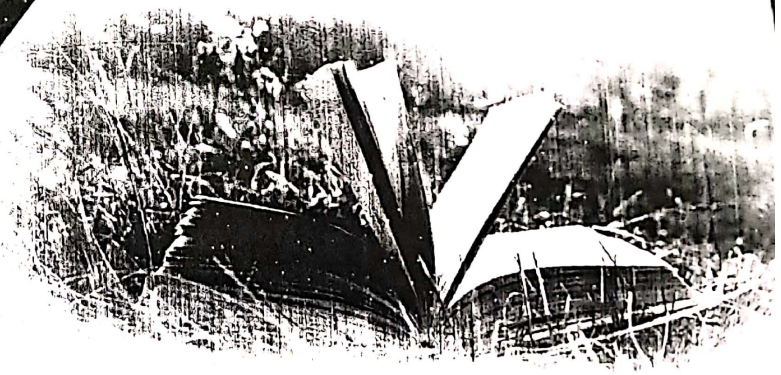

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with OKEN Scanner

26) नर्मदा नदी की जलीय गुणवत्ता का अध्ययन
आकाश चौधरी, आर. आर. कान्हेरे & आबिदा कुरैशी, इन्दौर ||114

27) मीडिया और हिंदी भाषा
अनिल गोविंद चौधरी, मुंबई ||118

28) धूमिल के काव्य में सामाजिक एवंम राजनीतिक चेतना
डॉ. गिरि डि.व्ही., जि.जालना ||121

29) मनरेगा का छत्तीसगढ़ ग्रामीण समाज के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर प्रभाव
हरि प्रकाश, डॉ. के. एन. दिनेश & डॉ. सुचित्रा शर्मा, दुर्ग ||124

30) निर्गुण संत साहित्य में कबीर का जनमानस पर प्रभाव
डॉ. संगीता जगताप, चिखलदरा, महाराष्ट्र ||127

31) भारत और चीन के मध्यद्विपक्षीय व्यापारका विश्लेषणात्मक अध्ययन
अहमद अली खोकर ||130

32) मोहन राकेश का परिचयात्मक अध्ययन
दीपाली कुजूर, वर्धा, महाराष्ट्र ||134

33) ग्वालियर जिले की कामकाजी महिलाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन (स्कूल– ...
मनोज कुशवाह & डॉ. विमलेश अग्रवाल, ग्वालियर (म.प्र.) ||139

34) प्रथम विश्वयुद्ध में जोधपर रियासत का योगदान
डॉ. उषा लामरोर, बीकानेर, राजस्थान ||143

35) अवधी विवाह–संस्कार गीतों का लोकपक्ष और वैशिष्ट्य
डॉ. (श्रीमती) मनोरमा मिश्रा, नई दिल्ली ||143

36) कार्यरत् महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० सबीहा रहमानी & मनीषा खरे, बाँदा (उ०प्र०) ||150

37) **लोक कला में नवीन प्रवृत्तियाँ**
उपासना राज ||155

38) जनजातीय समाज के विकास में गैर सरकारी संगठनों का योगदान (डूँगरपुर जिले ...
शक्ति सिंह राठौड़ ||158

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

१८।
(३) पंत.डी.सी.(२०११) **भारत में ग्रामीण विकास**, विश्व परती पब्लिकेशन पृ.—३५।
(४) मेहर सिंह,राव (२००४) **ग्रामीण समाजशास्त्र**,अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस अंसारी रोड दरिया गंज पृ.१३९।
(५) पंत.डी.सी.(२०११) **भारत में ग्रामीण विकास**, विश्व परती पब्लिकेशन पृ.६१।
(६) मेहर सिंह,राव. (२००४) **ग्रामीण समाजशास्त्र**, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस अंसारी रोड दरिया गंज पृ.१९८।

❑❑❑

30

निर्गुण संत साहित्य में कबीर का जनमानस पर प्रभाव

डॉ. संगीता जगताप
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
चिखलदरा, महाराष्ट्र

****

सारांश: आज समाज हिंसा आतंक साम्प्रदायिकता जातिवाद भाषावाद की आग में झुलस रहा है ऐसे समय हमारा संत साहित्य जनमानस को शीतलता और एक जीवन दृष्टि प्रदान करता है। इस साहित्य को अपना कर चिंतन—मनन कर हम अपने कलुषित मन का परिष्कार कर सकते है। उनकी वाणियाँ शाश्व और सर्वकालिक है। निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। मैं उसमें से अल्प अंश लेकर कबीर पर अपनी बात आपके सामने प्रस्तुत करने का छोटासा प्रयास करने जा रही हूँ।

हिन्दी साहित्य में निर्गुण संत साहित्य का विशिष्ट योगदान रहा है। इन संतों ने जनमानस में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया तथा मानव मन के परिष्कार की भरपूर कोशिश की। आज का युग प्रदूषण का युग है और सबसे बड़ा खतरा वैचारिक प्रदूषण का है।

यह भारत भूमि शस्यश्यामलाम् है जिसने समय पर अनेक महापुरूषों को जन्म दिया। राम, कृष्ण, बुद्ध, गांधी, कबीर, महावीर को इस देश ने जन्म दिया यहाँ सिकन्दर, हिटलर हलाकू नहीं पैदा हुये। कबीर पर बात कहते हुये सबसे पहले मुझे भतृहरि का श्लोक याद आता है—

जयन्ति ते सुकृतिनः रस सिद्ध कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काय जरा मरणश्च न भयम्।

अर्थात उन रस सिद्ध कवियों की जय हो जय हो जिनके यश रुपी शरीर को न तो वृद्धावस्था का

Scanned with OKEN Scanner

भय होता है न मृत्यु का।

कबीर के साहित्य का केंद्र मानव है, ये संत जनता के कवि थे जनता से निकले थे और जनता के कल्याणार्थ ही अपनी बात कह रहे थे। उनके वाणियों में जनमानस के लिये हर प्रश्नों का उत्तर मौजूद है, वैसे देखा जाये तो संसार में सभी कुछ नश्वर है, परन्तु मानवीय मूल्य शाश्वत है, जब तक ये मूल्य है, मानवता जीवित रहेगी इन्ही मानवीय मूल्यों को निर्गुण संत कबीर प्रतिस्थापित करना चाहते थे। अरबी कुरान में कबीर का अर्थ है 'महान' अर्थात कबीर अरबी शब्द है।

कबीर साहित्य सत्यं, शिवं और सुन्दरं से परिपूर्ण है। कबीर निरक्षर थे, उन्होंने स्वयं कहा है 'मसि कागद छुओं नहीं कलम गह्यों नहीं हाथ' परन्तु उनके हृदय में जनमानस की पीड़ा की छटपटाहट थी, वहीं दर्द उनके विद्रोह के रुप में फूट पड़ा, तभी तो वे कहते है —

देखो रे जग बौराना साधु देखो रे जग बौराना,
हिंदु कहै राम हैं मेरा, मुसलमान रहिमाना।
आपस में दाउ लरै मरत हैं भेद न कोउ जाना।

काव्य का जन्म ही करुणा और क्रोध से हुआ है। वाल्मीकि इसका उदाहरण है कबीर के काव्य का मुख्य स्वर क्रांति है, वे मानव के हृदय परिवर्तन के द्वारा क्रांति लाना चाहते थे इसलिये उनमें साहित्य में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा दिखाई देती है।

सत्य — सत्य ही धर्म है सत्य वह नहीं जो मुख से बोलते है, सत्य वह श्रेष्ठ है, जो मनुष्य के कल्याण के लिये बोला जाता है, इसलिये वे सत्य व्यवहार, सत्य कर्म, सत्य वचन, सत्य अनुभूति पर जोर देते है। समाज यदि सत्य के महत्व को समझले तो पाखंड और आडम्बर के दर्शन नहीं हो सकते इसलिये वे कहते है कि —

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप।।

आज भी झूठ की प्रशंसा और सत्य छटपटाता दिखाई देता है, कबीर भी अपने युग में सत्य और झूठ का संघर्ष देख रहे थे। हमारे मस्तमौला संत कबीर चुप नहीं बैठ सकें और झूठ और सत्य को इस प्रकार प्रकट कर दिया।

साँचे कोई न पतिजई, झुठ जग पतयाय।
गली—गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय।।

कबीर का व्यक्तित्व निर्भीक एवं विद्रोही था, वे उस चौरस्ते पर खड़े अपनी खुली आँखों से देखते थे और जो भी बाते वे कह रहे थे स्वानुभूत सत्य पर आधारित थी। तभी तो उनके जीवनकाल में उनके चाहनेवालों की भीड़ लग गई थी और संसार रुपी बाजार में खड़े वे सभी की खैर मांग रहे थे —

कबीरा खड़ा बाजार मे मांगे सबकी खैर।
ना काहुँ से दोस्ती ना काहुँ से बैर।।

संतोष — कबीर ये जानते थे कि मनुष्य की इच्छाएँ उन्नत है, जो तश्प्त होने का नाम नहीं लेती। नित्य नया रुप धारण करती रहती है। तृष्णावान मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता, इसलिये तो प्राचीनकाल से आज तक शोषक और शोषितों के बीच संघर्ष चला हुआ है, तभी तो कबीर कहते है —

सहज मिलै सो दूध सम, मांगे मिले सो पानि।
कहै कबीर वह रक्त सम जा मे ऐंचा तानि।।

इन पंक्तियों में क्या समाजवादी दृष्टि नहीं ? क्या कबीर कोई मार्क्सवादी से कम लगते है, आज शोषण के खिलाफ मंचों पर आवाज उठाई जा रही है, परन्तु कबीर तो साधारण लोगों को समझा रहे थे, इसके लिये जरुरी था मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ कम करें। जब आवश्यकताएँ कम हो जायेगी तो अपने आप वर्ग संघर्ष में कमी आ सकती है, तभी तो कबीर कहते है —

साँई इतना दीजिये जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु ना भूखा जाय।।

इन पंक्तियों में अपरिग्रह के साथ संतोष का भाव भी दिखाई देता है।

अहिंसा — 'मनसा वाचा कर्मणा' किसी को क्षति न पहुंचाना अहिंसा है। पूर्ण अहिंसा का अर्थ है प्राणीमात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव। सत्य के साथ अहिंसा ही संसार मे सबसे बड़ी शक्ति हैं परन्तु अहिंसा कायरपण नहीं है। गांधीजी ने एक बार कहा था ''जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो तो मैं हिंसा के पक्ष में रहूंगा।'' उस

Scanned with OKEN Scanner

है, ऐसे समय कबीर साहित्य हमे कहीं न कहीं एक स्वस्थ दृष्टि प्रदान कर रहा है। आजभी वे जनमानस को प्रभावित करते है, वे मानव को कुछ करने को प्रेरित कर रहे है उनकी पंक्ति जो मानव जीवन को एक संदेश है–

कबीरा हम पैदा हुये जग हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोय।।

निष्कर्ष:

इस शोध पत्र का विषय निर्गुण साहित्य का जनमानस पर प्रभाव यह एक विस्तृत विषय है, मै तो कहूँगी कि शताब्दियों के बाद भी यह साहित्य जन जन का कंठहार है। आज भी रावण का पुतला जलाया जाता है, आज ढ़ाई अक्ष प्रेम का, घर का भेदी लंका ढ़ाय, कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, परहित सरिस धरम नहीं भाई, चुगली करनेवाले को मंथरा, प्राण जाये पर वचन न जाई, दुख में राम के वनवास का उदाहरण आज भी दिया जाता है। अपने बच्चों का नटखट रुप कृष्णरुपम, विदेश में बसनेवाले भी व्यथा उधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही आदि काव्य पंक्तियाँ क्या शिक्षित या अशिक्षित सभी की जबान पर मौजूद है भारतीय संस्कृति की जीवित रखने तथा सामाजिक मर्यादा को बनाये रखने में इन निर्गुण सगुण कवियों का विशेष योगदान है। जब तक भारत मे नैतिक मूल्य जीवित है, तब तक यह साहित्य शाश्वत है कहा भी गया है कि–

तत्व तत्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठी।
शेष बची कबीरा कही, बाकी कही सो झूठी।।
इन सब संत और भक्तों को शत–शत प्रणाम।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

१. कबीर ग्रंथावली – श्यामसुन्दरदास, पृष्ठ १९१
२. कबी ग्रंथावली – सं. पारसनाथ तिवारी, पृष्ठ १०९
३. संतवाणी संग्रह भाग २, पृष्ठ ८३
४. पलटूदास की वाणी, पृष्ठ ७७

31

भारत और चीन के मध्यद्विपक्षीय व्यापार का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अहमद अली खोकर

****

प्रस्तावना

एशिया के दो दिग्गजों देश भारत और चीन के मध्य संबंध काफी गति से आगे बढ़ रहे हैं। दोनों ने पिछले कुछ वर्षों में अपने उतार–चढाव देखे हैं व आज वे एशिया की दो सबसे बढ़ी और सबसे गतिशील अर्थव्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते है जो अन्तर्राष्ट्रीयसंबंधों मे नए चलन के रूप में उभर रही है भारत और चीन के मध्य द्विपक्षीय संबंधों का इतिहास १९८० के दशक से रहा है।

उस समय दोनों देशों की सरकारों द्वारा शुरू की गयी बातचीत की प्रक्रिया आम व्यापार हितों की पहचान करने में काफी मददगार थीं। भारत और चीन के मध्य आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए व उनकी आर्थिक ताकत को बढ़ाने के लिए प्रयास शुरू किये गये वे १९८४ में भारत और चीन ने एक व्यापार समझौता किया, जिससे उन्हें मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा प्रदान किया गया। वर्ष १९९२ में भारत और चीन पूर्ण रूप से द्विपक्षीय व्यापार संबंध में शामिल हो गये थे। भारत और चीन के आर्थिक संबंधों में एक नए युग की शुरूआत १९९४ में की गयी, इस वर्ष दोनों देशों के मध्य दोहरे कराधान समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। दोनों देशों की सरकार ने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) में व्यापार के लिए आवश्यक पहल की गयी। वर्ष २००३ में दोनों देशों के मध्य बैंकॉक समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इस समझौते के तहत भारत और चीन ने एक–दूसरे को कुछ व्यापारिक प्राथामिकताएं

Scanned with OKEN Scanner